सं शो वि । सोनीपत / 230-84 / 3477. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं सोनीपत ग्रायरन एण्ड स्टील रोलिंग मिल, इण्डस्ट्रीयल ऐरिया, सोनीपत, के श्रमिक श्री ईण्वर सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीशोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मिलतयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641—1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 सुन्य पिट ते संरकारी अधिसूचना सं० 3864—ए एस श्रो (ई) 70/श्रम/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है:—

वया श्री ईश्वर सिंह की सेवाग्रों का समापन व्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो. वि./रोहतक/49-84/3484.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० वार्डन बुडन इण्डस्ट्रीज, गवर्नमेन्ट ई० ऐरिया, नियर सेठराम नारैन फलोर मिल्ज, बहादुरगढ़, रोहतक) के श्रमिक श्री जापकी तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इस लिए, ग्रव, ग्रीद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धार। 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ पठित सरकारी ग्रिधिसूचना सं 3864-ए. एस. ग्रो. (ई)-श्रम/70/1348, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की घारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री जानकी की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. थ्रो.वि./रोहतक/227-84/3491.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै० मोहन स्पिनिंग मिल, रोहतक, के श्रमिक श्री नरेन्द्र कुमार तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामलेमें कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रीचोगिक विवाद श्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तयों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रधिसूचना सं. 3864-ए.एस.श्रो.(ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रधिनियम की बारर 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विचादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा भामला न्यायनिर्णय स्तृ निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित । । । ।

क्या श्री नरेन्द्र कुमार की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भ्रो. वि./रोहतक/201-84/3498.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै० जे० सी० फोर्जिंग एण्ड स्टील लिंग मिल, बहादुरगढ़ (रोहतक), के श्रमिक श्री ग्रमृत लाल तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले कोई श्रीशोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, अन, औद्योगिक विवाद अधिनियम 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदीन की गई शक्तियाँ र प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-अम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के य पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ओ.(ई) अम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के भ्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवाद ग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिन ग्रंथ हेतू निविष्ट करते हैं, जो कि उनत प्रबन्धकों सथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उनत विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है :—

क्या श्री ग्रमृत लाल की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठोक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? दिनांक 1 फरवरी, 1985

सं .श्रो. वि./एफ.डी./156-84/3912.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. मिलक बोक्स फैक्ट्री, 1-ए/19, एन०ग्राई०टी, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री कृष्ण देव तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, मोद्योगिक विवाद मिर्धित्यम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यवाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-अम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुये अधिसूचना सं. 11495-जी-अम-88-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिनियम को धारा 7 के अश्रीन गठित अब त्यायाना, फरो सवाद, को विवादम्सन या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादमस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री कृष्ण देव की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं भो. वि/एफ डी./194-84/3919.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं हिन्दुस्तात ब्राऊन बावेरी लिं पोस्ट बाक्स नं 16, इण्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद, के श्रीमक श्रीमती जगदेवी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ीद्योगिक विवाद है;

भीर चुंकि हरियाणा के राज्यपात विवाद की स्यायनिर्णय हे तु निर्दिष्ट करना वांछनीय समज ते हैं;

इसलिए, ग्रब, श्रीबोगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिद्धसूचना सं० 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं० 11495-जी-श्रम-88/श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उचत श्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनणय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो चिवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्रीमती जगदेवी की सेवाग्री का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. म्रो. वि./एफ.डी./185-84/3941.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं व्यूनिकेम इण्डस्ट्रीज, 6, इण्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदावाद, के श्रमिक श्री शंक्षर दयाल यादव तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णंय हेतु निदिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं. 5415-3 क्रिस् (68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं. 11495-जी-श्रम-88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निदिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त गिपलि है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:---

क्या श्री शंकर दयाल यादव की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीका है और सिह सेहिंद को एका कि किसाप्यीहत्य है का हकदार है ? श्री श्री कि प्रतिकृति के प्रति के प्रतिकृति के प्रति